KAIVALYADHAMA
Where Yoga tradition and Science meet
100 YEARS

प्राकृतिक चिकित्सा उपचार सहायक

यूनिट 1 – योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा की मूलभूत अवधारणाएँ

- योग की मूलभूत अवधारणाएँ एवं कैवल्यधाम परंपरा
- स्वामी कुवलयानंद जी का जीवन परिचय एवं उनकी विरासत
- योग की परिभाषा एवं इतिहास
- अष्टांग योग
- आसन, प्राणायाम, बंध, मुद्रा, ध्यान एवं क्रियाओं की परिभाषा एवं व्याख्या
- प्राकृतिक चिकित्सा की परिभाषा, स्वास्थ्य एवं रोग के कारण
- प्राकृतिक चिकित्सा का इतिहास एवं मूल सिद्धांत
- प्राकृतिक चिकित्सा की जीवनशैली
- तीव्र, दीर्घकालिक एवं अपक्षयी रोग तथा उनका उपचार

यूनिट 2 – मैनिपुलेटिव थेरेपी (सिद्धांत एवं प्रायोगिक)

- मालिश की परिभाषा एवं इतिहास
- मालिश चिकित्सक हेतु नियम एवं विनियम
- मालिश में प्रयुक्त तेल एवं स्नेहक
- मालिश के प्रकार – केलॉग्स मालिश, जेरियाट्रिक मालिश, गर्भावस्था पूर्व एवं पश्चात मालिश, पाउडर मालिश, बाल मालिश एवं अन्य प्रकार
- मालिश की गतियाँ – स्पर्श, घर्षण, स्ट्रोकिंग, नीडिंग, वाइब्रेशन, परकशन एवं जोड़ों की गतियाँ
- शरीर की विभिन्न प्रणालियों पर मालिश के प्रभाव
- संकेत एवं निषेध

यूनिट 3 – शरीर रचना एवं शरीर क्रिया विज्ञान

- मांसपेशी एवं अस्थि तंत्र
- श्वसन तंत्र
- पाचन तंत्र

- उत्सर्जन तंत्र
- परिसंचरण तंत्र
- तंत्रिका तंत्र
- अंतःस्रावी एवं प्रजनन तंत्र

यूनिट 4 – जल चिकित्सा

- जल चिकित्सा की परिभाषा एवं परिचय
- जल – एक सार्वभौमिक विलायक
- जल चिकित्सा के नियम
- जल की तैयारी एवं प्रत्येक उपचार की प्रक्रिया
- तापमान एवं समयावधि, ठंडे एवं गर्म जल का शारीरिक प्रणालियों पर प्रभाव
- क्रिया एवं प्रतिक्रिया, संकेत, निषेध एवं सावधानियाँ
- जल चिकित्सा उपचार – पैक, स्नान, स्प्रे आदि
- जल चिकित्सा द्वारा आपातकालीन प्रबंधन

यूनिट 5 – मृदा चिकित्सा

- मृदा चिकित्सा की परिभाषा
- मिट्टी के गुण एवं विशेषताएँ
- मिट्टी की प्रसंस्करण एवं शुद्धिकरण प्रक्रिया
- मिट्टी के उपयोग के प्रकार – सामान्य एवं स्थानीय (प्रत्यक्ष एवं पैक)
- मृदा स्नान एवं स्थानीय प्रयोगों के प्रभाव
- ठंडे एवं गर्म मृदा पैक की तैयारी – माप एवं अवधि
- संकेत एवं निषेध

यूनिट 6 – आहार एवं पोषण

- आहार, पोषण एवं संतुलित आहार की अवधारणा
- स्वस्थ आहार आदतें – क्या, कब, कहाँ, कैसे, कितना एवं कितनी बार
- आहार के प्रकार – शोधन (Eliminative), शांतिदायक (Soothing), निर्माणात्मक (Constructive)
- कच्चा आहार – फल, सलाद एवं अंकुरित अनाज (प्रायोगिक कार्य)

- प्राकृतिक चिकित्सा व्यंजन – सूप, दलिया, पोरीज एवं मिलेट्स की तैयारी (प्रायोगिक प्रशिक्षण)
- आधुनिक पोषण – प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन एवं खनिज
- पकाने एवं बिना पकाने की विधियाँ, सामग्री का चयन, परोसने के तरीके, स्वच्छता एवं वातावरण का महत्व

यूनिट 7 – उपवास

- उपवास की परिभाषा एवं महत्व, उपवास एवं भूख में अंतर
- उपवास के प्रकार – चिकित्सीय, धार्मिक एवं राजनीतिक
- उपवास की प्रक्रिया एवं उसका महत्व
- उपचार संकट एवं रोग संकट
- उपवास के प्रभाव
- चिकित्सीय संकेत एवं निषेध

यूनिट 8 – मैग्नेटो थेरेपी

- चुंबक की परिभाषा, गुण एवं प्रभाव
- चुंबकों के प्रकार (आकार एवं शक्ति)
- उपचार की विधि – सामान्य एवं स्थानीय प्रयोग
- संकेत एवं निषेध
- जल एवं तेल को चार्ज करना एवं उनका उपयोग
- विद्युत चुंबकीय क्षेत्र एवं स्वास्थ्य में उसका महत्व

यूनिट 9 – क्रोमो थेरेपी (रंग चिकित्सा)

- परिभाषा
- क्रोमो थेरेपी का महत्व
- रंगों के प्रभाव, संकेत एवं निषेध
- जल एवं तेल को रंगों द्वारा चार्ज करना
- क्रोमो थर्मोलियम
- सूर्य स्नान – संकेत, निषेध, सावधानियाँ एवं समयावधि

यूनिट 10 – एक्यूप्रेशर एवं रिफ्लेक्सोलॉजी

- एक्यूप्रेशर की परिभाषा, अवधारणा एवं मूल सिद्धांत
- स्थानीय बिंदु एवं चिकित्सीय प्रयोग
- प्रयोग की विधि – दबाव एवं समय

यूनिट 11 – फिजियोथेरेपी

- परिभाषा एवं सिद्धांत
- इलेक्ट्रोथेरेपी
- वैक्स थेरेपी
- एंथ्रोपोमेट्री
- संकेत एवं निषेध

यूनिट 12 – क्लिनिकल प्रशिक्षण एवं नर्सिंग केयर

- स्टाफ का संवार (Grooming) – आत्मविश्वास, वस्त्र, बाल, दाँत, हाथ एवं पैर के नाखून, सही मुद्रा, दैनिक स्नान, व्यक्तिगत स्वच्छता, प्रथम प्रभाव एवं आत्म-प्रस्तुति
- संचार कौशल
- नैतिकता एवं रोगी देखभाल (रोगियों की सहायता, प्राथमिक उपचार, व्हीलचेयर पर रोगियों की देखभाल)
- उपचार सहायक की जिम्मेदारियाँ

विशेष नोट

- जब सैद्धांतिक कक्षाएँ न हों, तब प्राकृतिक चिकित्सा या आवंटित विभाग में दैनिक ड्यूटी अनिवार्य होगी
- प्रायोगिक पोस्टिंग चिकित्सक, प्राकृतिक चिकित्सा विभाग, एक्यूपंक्चर एवं फिजियोथेरेपी के साथ होगी
- केस प्रेजेंटेशन:
    - मैनिपुलेटिव थेरेपी – 50
    - जल चिकित्सा – 50
    - मृदा चिकित्सा – 50

नियम एवं विनियम

- कैवल्यधाम की सभी नीतियाँ लागू होंगी
- सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक कक्षाओं में अनिवार्य उपस्थिति
- पाठ्यक्रम पूर्ण करने के बाद प्रमाणपत्र हेतु मदर इंस्टिट्यूट में 6 माह की अनिवार्य इंटर्नशिप

- पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाले प्रतिभागियों को कैवल्यधाम मदर इंस्टिट्यूट या उसकी शाखाओं में प्रथम 6 माह का रोजगार प्रदान किया जाएगा
- प्रत्येक बैच में न्यूनतम 10 विद्यार्थियों का प्रवेश (पुरुष एवं 5 महिला उपचार सहायक सम्मिलित)
- सभी प्रायोगिक कार्य विभागाध्यक्ष (प्राकृतिक चिकित्सा) की निगरानी में होंगे
- सभी प्रायोगिक रिकॉर्ड पुस्तिकाओं पर प्रतिदिन विभागाध्यक्ष या प्राकृतिक चिकित्सक के हस्ताक्षर अनिवार्य
- संस्थान के अन्य सभी नियम एवं विनियम विद्यार्थियों पर लागू होंगे